हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री और हरिशंकर परसाई

माधप मंडल

साहित्य एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा मानव अपने तमाम भावनाओं को व्यक्त करने के साथ साथ समाज की हलचलो एवं परिवर्तनो का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। सामाजित परिवर्तनो के साथ-साथ साहित्य के विषयों में भी परिवर्तन आता है। यह कहा जा सकता है कि साहित्य समाज और जीवन का ही चित्रण है। किसी भी साहित्य का मूल केन्द्र बिन्दु मानव जीवन है। मानव जीवन में, समाज मे स्त्री और पुरुष दो प्रमुख घटक है। समाज संचालन में स्त्री और पुरुष की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। अतः साहित्य में भी स्त्री एवं पुरुष की भूमिका लक्षणीय है। परन्तु समाज में पुरुष की स्थिति आरंभ से अब तक लगभग स्थिर रही है। उसकी भूमिका में कुछ खास परिवर्तन नही आया है। वह हमेशा से स्वयं को श्रेष्ट और स्त्री को हीन मानता आया है। पंरतु दूसरी ओर स्त्री की स्थिति में निरंतर उतार चढ़ाव आते रहे है। सामाजिक स्थिति में बदलाव के साथ समाज मे स्त्री की स्थिति भी बदलती रही है और उसी के अनुरूप साहित्य में स्त्री का स्थान भी निंरन्तर परिवर्तित होता रहा है। प्राचीन काल मे स्त्री को देवी माना जाता था। कहा जाता था कि जहां स्त्री को पूज़ा जाता है, उनका सम्मान किया जाता है, वहाँ देवता का वास होता है। परंतु धीरे धीरे सामन्तवादी मानसिकता से प्रभावित होकर समाज के लोगो की दृष्टि स्त्री के प्रति संकुचित होती गई। सामंतवादी समाज मे स्त्री की भूमिका एक निष्क्रिय, जड़ वस्तु की तरह थी जो केवल पुरुषो का साथ पाकर ही गौरवान्वित हो सकती थी। पंरतु समय के साथ साथ धीरे-धीरे सामाजिक प्रगति के साथ यह स्थिति बदलने लगी और स्त्री अपनी स्थिति, अपने अधिकारों के प्रति सचेत होने लगी। उसे यह अनुभव होने लगा कि उसकी सामाजिक पराधीनता का मूल कारण उसकी आर्थिक पराधीनता है। अतः वह आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होने की चेष्टा करने लगी। इसी क्रम मे उसका विरोध पुरुष से होता है। क्योंकि पुरुष यह सहन नहीं कर पाते कि सदियों से गुलामों की तरह उनके अधीन रहने वाली स्त्री आज कर्मक्षेत्र मे उनकी बराबरी करे अथवा उनसे आगे बढ़ जाए। वह अपने हार को स्वीकार करने की मानसिकता नही रख पाता और बौखला जाता है। इसी बौखलाहट को वह शारीरिक दृष्टि से अपेक्षाकृत कमजोर स्त्री के ऊपर अत्याचार करके व्यक्त करता है। आज सम्पूर्ण समाज में स्त्रियो पर जो अत्याचार हो रहे है, वह इसी बात का प्रमाण है कि पुरुषो को आज अपनी स्थिति डगमगाती हुई नजर आ रही है। उन्हे डर है कि स्त्री उनसे आगे न निकल जाए। इसी कारण अपने झुठे. अस्तित्व को जैसे-तैसे बनाए रखने की कोशिश मे वह अपने श्रद्धा एवं सम्मान का जो सामान्यतम स्थान स्त्री के मन में था, उसे भी खोता जा रहा है।